GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

सांख्य दर्शन की वैचारिक उत्पत्ति

Dr.Jitendrasinh Bhemabhai Khant

- **प्रस्तावना :-**

प्राचीन काल में संस्कृत साहित्य के भीतर दर्शन शब्द के स्थान पर मीमांसा शब्द का प्रचलन था। दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति **दृश** (देखना) धातु से हुई है। **'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्'** अर्थात् जिसके माध्यम से (तत्त्व को) देखा जा सके, वही दर्शन है। सरल शब्दों में, तत्त्व का साक्षात्कार ही दर्शन कहलाता है। दर्शन को सत्य को देखने का साधन माना जाता है और इसी आधार पर विभिन्न दर्शन सत्य तक पहुँचने के अलग-अलग मार्ग हैं। सत्य का स्वरूप क्या है? उसे कैसे प्राप्त किया जाए? क्या इस दृश्यमान जगत में जो कुछ दिखता है वह सत्य है? ऐसे मौलिक प्रश्नों की विवेचना जहाँ प्राप्त होती है, उसे दर्शन कहते हैं। मुमुक्षुओं (मोक्ष की इच्छा रखने वालों) ने साधना, चिंतन, मनन और ध्यान से प्राप्त बोध के माध्यम से इन प्रश्नों के समाधान देने का प्रयास किया है। पाश्चात्य विचारक इसी विषय को **'फिलॉसोफी'** या **तत्त्वज्ञान** के नाम से पुकारते हैं।

षड्दर्शनों में सांख्य दर्शन सर्वाधिक प्राचीन है। अन्य भारतीय दर्शनों की भांति सांख्य दर्शन भी दुःख से मुक्ति की जिज्ञासा के साथ प्रारंभ होता है। दुःख का मूल कारण और दुःख को भोगने वाले (चेतन तत्त्व) के वास्तविक स्वरूप का विश्लेषण ही इसका मुख्य विषय है। सांख्य दर्शन में यह समझना अनिवार्य है कि दुःख निवारण की इच्छा किसे हो सकती है? इस मार्ग में कई बाधाएँ आती हैं, जो कभी-कभी निराशा उत्पन्न करती हैं। यह निराशा एक विशिष्ट प्रकार की पीड़ा को जन्म देती है, जो किसी सामान्य व्यक्ति का सांसारिक असंतोष नहीं, बल्कि

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

एक दार्शनिक अतृप्ति है। सांख्य दर्शन नकारात्मक या निराशावादी नहीं है, बल्कि यह निराशा को समूल नष्ट करने के लिए संकल्पित एक पूर्णतः आशावादी दर्शन है।[१]

सांख्य शब्द संख्या की ओर संकेत करता है। कुछ विद्वानों का मत है कि इसमें २५ तत्वों की गणना की गई है, इसीलिए इसका नाम **'सांख्य दर्शन'** पड़ा। वहीं, कुछ विशेषज्ञों के अनुसार यहाँ संख्या का अर्थ मात्र गिनती नहीं है, जिसके प्रमाण में महाभारत का एक श्लोक प्राप्त होता है:

संख्यां प्रकुर्वते च प्रकृतिं च प्रचक्षते।

तत्वानि च चतुर्विंशत् संख्याः प्रकीर्तिताः।। (महाभारत, आदिपर्व)

अतः संख्या का अर्थ केवल गणना तक सीमित नहीं है, अपितु इसका एक अन्य अर्थ सम्यक विचारणा (सही चिंतन) भी है।[२] तत्त्वो का तर्कपूर्ण और गहरा विचार करने वाला शास्त्र ही सांख्य है।

दोषाणां च गुणानां च प्रमाणं प्रविभागतः।

कश्चिदर्थमभिप्रत्ये सा संख्येत्युपधार्चताम्।। (महाभारत आदिपर्व)

संख्या और सांख्य शब्दों का प्रयोग आत्मज्ञान के संदर्भ में भी देखने को मिलता है। सांख्य शब्द का एक अर्थ **'सम्यक् ख्याति सम्यक् ज्ञान'** होता है, क्योंकि यह शब्द **सम् + ख्या** धातु से निर्मित हुआ है। इसका दार्शनिक चिंतन इस प्रकार है। **'इमं सत्वरजत्समांसि गुणा भवा दृश्या। अहं तेभ्योऽभ्यः। तद्व्यापार साक्षीभूतो नित्यो गुनविलक्षणा आत्मेति चिन्तनम् एष सांख्यः।'**[३]

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

श्वेताश्वतरोपनिषद में सांख्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मिलता है। आदि शंकराचार्य इसका अर्थ ज्ञान करते हैं, जबकि रामानुजाचार्य और श्रीधर गीता में प्रयुक्त सांख्य शब्द का अर्थ आत्म-तत्त्व बताते हैं। ये सभी प्रमाण सांख्य दर्शन की प्राचीनता को पुष्ट करते हैं।

➢ **वेदों में सांख्य :-**

सांख्य विचारधारा और इसके सिद्धांतों के बीज कम या अधिक मात्रा में वेदों, उपनिषदों, महाभारत तथा पुराणों में संव्याप्त हैं। प्राचीन सांख्य एक दार्शनिक रूप में किस प्रकार विकसित हुआ और इसके मूल स्रोत कहाँ हैं, इसे समझना आवश्यक है।

ऋग्वेद के अधिकांश मंत्रों में देवताओं की स्तुति है, किंतु कुछ सूक्तों में विश्व के गूढ़ रहस्यों को प्रकट करने वाली दार्शनिक प्रवृत्ति का उदय स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।[४] नासदीयसूक्त (१०/१२९) में सांख्य की अव्यक्त प्रकृति, हिरण्यगर्भसूक्त (१०/१२१) में सृष्टि के उत्पत्ति-क्रम और पुरुषसूक्त (१०/९०) में पुरुष-तत्त्व के बीज स्पष्टतः दिखाई देते हैं। अथर्ववेद के स्कंभ सूक्तों में भी कुछ विद्वानों को सांख्य दर्शन की झलक मिलती है। यद्यपि समय के लंबे अंतराल और अर्थों की जटिलता के कारण वेदों के आधार पर सांख्य के विषय में कोई अंतिम धारणा बनाना कठिन है, फिर भी उपलब्ध जानकारी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

➢ **उपनिषदों में सांख्य :-**

समस्त भारतीय आस्तिक दर्शनों का मूल आधार उपनिषद ही हैं। सांख्य दर्शन में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली-जैसे अव्यक्त प्रकृति, बुद्धि, अहंकार, पुरुष आदि-का प्रयोग व्यापक रूप से उपनिषदों में मिलता है। जब उपनिषद जगत के कारण **'ब्रह्म'** को आत्म-स्वरूप में पहचानने पर

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

बल देते हैं, तब **'वेदांत'** का प्रतिपादन होता है; और जब वे जगत के कारण स्वरूप अव्यक्त प्रकृति और पुरुष के पृथक्करण (विवेक) का निरूपण करते हैं, तब सांख्य का प्रादुर्भाव होता है।

- मानव शरीर के दो मुख्य विभाग हैं: प्रथम, स्थूल देह का निर्माण करने वाले तत्त्व और द्वितीय, वह जीवंत तत्त्व जो मृत्यु के पश्चात भी अविनाशी रहता है।
- कौषीतकि उपनिषद (२-१३) में मृत्यु के बाद भी शेष रहने वाले इसी तत्त्व के कारण जन्म-मरण के चक्र, अर्थात् संसार की संकल्पना प्रस्तुत की गई।
- स्थूल देह को निर्मित करने वाले तत्त्वो में से स्थूल अंश अपने सूक्ष्म मूल की ओर प्रवृत्त होते हैं । २-१३-१४, छान्दोग्य ४-३-३ ।[५]
- इसी जीवंत तत्त्व को कालांतर में आत्मा या जीवात्मा कहा गया और अंततः कठोपनिषद में इसके लिए पुरुष शब्द का प्रयोग मिलता है।
- सांख्य दर्शन में प्रयुक्त बुद्धि शब्द यहाँ विज्ञान या चैतन्य के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

श्वेताश्वतरोपनिषद में सांख्य के अधिकांश तत्त्व स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। इसमें सांख्य और कपिल जैसे शब्दों का भी उल्लेख है। यहाँ वार्षगण्य के सांख्य सिद्धांत की आधारशिला देखी जा सकती है। यद्यपि श्वेताश्वतरोपनिषद में पुरुष पूर्णतः स्वतंत्र नहीं है और उसकी स्थिति सांख्य के लिंग शरीर (सूक्ष्म शरीर) के समान है, फिर भी यहाँ ईश्वर या परमात्म- तत्त्व की उपस्थिति स्पष्ट है। बृहदारण्यक उपनिषद में पुरुष का पृथक और साक्षी स्वरूप दिखाई देता है।[६] यहाँ महत् तत्त्व के माध्यम से सांख्य के बुद्धि- तत्त्व का स्मरण होता है। मैत्रायणी उपनिषद में पुरुष और प्रकृति के संदर्भ को स्पष्ट किया गया है; इसी उपनिषद में जल, तेज, वायु आदि को आत्मा के शरीर के रूप में पहचाना गया है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

मुण्डकोपनिषद (१-१-८) और प्रश्नोपनिषद (१-१४) के साथ-साथ अन्य उपनिषदों में भी '**अन्न**' का वर्णन मिलता है। यहाँ भूत-सृष्टि की उत्पत्ति और ब्रह्म के साथ उसके संबंध को दर्शाया गया है। मैत्रायणी उपनिषद में सर्वप्रथम तीनों गुणों (सत्त्व, रज, तम) का नाम सहित उल्लेख प्राप्त होता है। प्रश्नोपनिषद के चतुर्थ प्रश्न में कहा गया है कि सुषुप्ति अवस्था में इंद्रियाँ मन में और मन तेज में विलीन हो जाता है। मुण्डकोपनिषद के प्रसिद्ध मंत्र **'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्षः'** के माध्यम से पुरुष के 'अकर्ता' होने का ज्ञान होता है। श्वेताश्वतरोपनिषद को तो सांख्य-उपनिषद तक कहा जाता है, जिसमें स्पष्ट उल्लेख है - **"तत्कारवां सांख्ययोगाधिगम्यम्"**[७]

- **बौद्ध धर्म में सांख्य :-**

दुःख से मुक्ति और किसी एक ही परम तत्त्व की प्रधानता को स्वीकार करना - इन दो तथ्यों के आधार पर बौद्ध धर्म और सांख्य में समानता दिखती है। अश्वघोष रचित **'बुद्धचरित'** के १२वें सर्ग में बुद्ध और अराड के संवाद के दौरान सांख्य तत्त्वों की विस्तृत चर्चा मिलती है। विद्वान जहोनस्टन 'बुद्धचरित' को 'सांख्यकारिका' से भी प्राचीन मानते हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि बुद्धचरित में प्रस्तुत सांख्य का स्वरूप अत्यंत प्राचीन रहा होगा।[८] जहाँ बौद्ध दर्शन क्षणिकवादी है, वहीं सांख्य में भी कुछ अंशों में क्षणिकता की चर्चा आती है। हालाँकि, सांख्य पुरुष और प्रकृति को शाश्वत (सनातन) स्वीकार करता है। सांख्य का सत्कार्यवाद बौद्धों को मान्य नहीं है। साथ ही, सांख्य के तीन गुण पुरुष, प्रकृति और विवेक जैसे महत्वपूर्ण सिद्धांत भी बौद्ध दर्शन में पूरी तरह स्वीकार्य नहीं हैं। विद्वान गार्बे का मानना है कि बुद्ध के

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

जन्मस्थान का नाम कपिलवस्तु महर्षि कपिल के नाम पर पड़ा और सांख्य का प्रचार भी बौद्ध धर्म की भाँति उत्तर भारत में ही हुआ।[९]

- **महाभारत में सांख्य :-**

महाभारत में सांख्य दर्शन से संबंधित अनेक गंभीर संदर्भ प्राप्त होते हैं। सनत्सुजातापर्व, मोक्षधर्मपर्व, भगवद्गीता तथा अनुगीता में सांख्य की चर्चा विशेष रूप से दिखाई देती है। भगवद्गीता महाभारत का ही एक अंग है, जिसके दूसरे अध्याय का नाम सांख्ययोग है; यह सांख्य दर्शन की प्राचीनता का अकाट्य प्रमाण है। इसमें पंचमहाभूतों, चौबीस तत्त्वो और तीन गुणों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। (३-२००९, १६-२१, २११-४**)** शांतिपर्व (२८५,३३-४०) में पुरुष और प्रकृति के भेद को स्पष्ट किया गया है। अनुगीता के अनुसार, पुरुष अकर्ता है और केवल प्रकृति ही प्रवृत्त (सक्रिय) है। गीता में पुरुष को क्षेत्रज्ञ और शरीर को क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया गया है, जहाँ क्षेत्र ही समस्त प्रवृत्तियाँ करता है। यद्यपि यहाँ प्रकृति पुरुष से सर्वथा भिन्न प्रतीत नहीं होती, फिर भी दोनों का संबंध जल और मछली (मीन) के समान दर्शाया गया है। शांतिपर्व के जनक-सुलभा संवाद में सांख्य शब्द की विस्तृत व्याख्या की गई है। भगवद्गीता में सांख्य का प्रयोग केवल एक दर्शन के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान के अर्थ में (२-२९ और ३-३) अधिक हुआ है। यहाँ सांख्य और योग के समन्वय का निरंतर प्रयास दिखता है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार - इन आठ तत्त्वों को अपरा प्रकृति और परमात्मा के परम स्वरूप को परा प्रकृति कहा गया है। श्री लोकमान्य तिलक ने सांख्य के २५ तत्वों और परा-अपरा प्रकृति के समन्वय की विस्तारपूर्वक विवेचना की है।[१०]

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

- **पुराणों में सांख्य :-**

पुराणों में प्रयुक्त सर्ग शब्द सृष्टि की उत्पत्ति का द्योतक है, जिसके मूल सिद्धांत सांख्य दर्शन में समाहित हैं। चूँकि पुराण मुख्य रूप से ब्रह्मा, विष्णु, शिव और शक्ति के महिमागान को प्रकट करते हैं, इसलिए उनमें वर्णित सांख्य सेश्वर (ईश्वर सहित) है। विष्णु पुराण में चैतन्य के कारण पुरुष को प्रकृति से श्रेष्ठ और भगवान विष्णु से उत्पन्न बताया गया है। यहाँ ईश्वर को त्रिगुणों की साम्यावस्था से युक्त प्रकृति कहा गया है और उन्हें ही परब्रह्म माना गया है। उन्हीं से प्रकृति पृथक होती है। पुरुष और प्रकृति के संयोग से बीजरूप में महत् प्रकट होता है। इस बीज से बुद्धि (महत्), फिर अहंकार, और तत्पश्चात तन्मात्राओं एवं इंद्रियों की उत्पत्ति होती है। भागवतपुराण के अनेक सिद्धांत सांख्य दर्शन से अत्यधिक साम्यता रखते हैं। यहाँ तक कि वेदांत के साथ भी सांख्य के सिद्धांतों का गहरा समन्वय दिखाई देता है।[११]

- **निष्कर्ष एवं योगदान :-**

उपर्युक्त विवेचन के प्रकाश में सांख्य दर्शन के उद्गम स्रोतों और इसके वैचारिक योगदान को समझा जा सकता है। वेदों, उपनिषदों, बौद्ध आगम साहित्य, महाभारत और पुराणों में सांख्य विषयक चिंतन एवं इसका व्यापक प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित होता है। सांख्य दर्शन के महत्वपूर्ण सिद्धांतों की चर्चा से यह सिद्ध होता है कि भारतीय दर्शन के विकास में इसका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वैशेषिक दर्शन की पदार्थ-मीमांसा की तुलना में सांख्य की पदार्थ-मीमांसा अधिक तर्कसंगत प्रतीत होती है, इसीलिए सांख्य दर्शन को प्राचीन भारत का पदार्थ विज्ञान (Physics) कहा जा सकता है। न्याय-वैशेषिक के बहुतत्त्ववाद का सूक्ष्म विश्लेषण कर **'द्वैतवाद'** (प्रकृति-पुरुष) की तर्कपूर्ण स्थापना करके सांख्य ने दार्शनिक विचारधारा को एक नई गति प्रदान

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

की है। यद्यपि जड़ प्रकृति स्वतः प्रवृत्त होती है - यह मत शास्त्र और तर्क दोनों की कसौटी पर पूर्णतः खरा नहीं उतरता और पुरुष-बहुत्व (अनेक आत्माएँ) का सिद्धांत भी कुछ दोषपूर्ण लगता है, फिर भी इसकी महत्ता कम नहीं होती।

परवर्ती दार्शनिकों, विशेषकर वेदांतियों ने सांख्य के कई सिद्धांतों की समीक्षा की और उनका खंडन भी किया, किंतु सांख्य का तत्त्व-विश्लेषण अत्यंत दूरगामी और गहन है। वस्तु-तत्त्व को समझने की एक वैज्ञानिक पद्धति सांख्य ने विकसित की है। सांख्य के यथार्थवादी दृष्टिकोण ने भारतीय चिंतन प्रणाली पर व्यापक प्रभाव डाला है। यह सृष्टि की संरचना को भौतिक और मनोवैज्ञानिक दोनों स्तरों पर परखता है। भले ही इसकी तर्कसंगत विकास-प्रक्रिया पूर्णतः दोषमुक्त न हो, फिर भी इसकी तत्त्व-मीमांसा का मूल्य कम नहीं आँका जा सकता। स्वयं वेदांत भी सांख्य की पद्धति को स्वीकार करता है। सांख्य दर्शन ने तत्त्व-मीमांसा को उस ऊँचाई पर पहुँचाया, जहाँ से वेदांत ने उसे पूर्णता प्रदान की। अतः तत्त्व-अनुसंधान के क्षेत्र में सांख्य का योगदान अतुलनीय और प्रशंसनीय है।

सन्दर्भ-संकेत

(१) Sankhya System, V.V. Sovani Page-7

(२) चर्चा सांख्य विचारणा। अमरकोष १-५-२

(३) एकमेव दर्शन ख्यातिरेव दर्शनम्, पञ्चशिखाचार्य

(४) Indian Idealism S.N. Das Gupta, P-80

(५) Indian Idealism S.N. Das Gupta, P-81

(६) बृहदारण्यक उपनिषद २-३-१२

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

(७) श्वेताश्वतरोपनिषद ६-१३

(८) Sankhya System pp 25.26

(९) पंडित सूर्यनारायण शास्त्री पे.५

(१०) गीतारहस्य प्रकरण-७

(११) Evol. of San.Sch of Thought P.47